राज कामिक्स

मूल्य 10.00 V-1

विराट

मेरी नागरस्सी अपराधियों के लिए फांसी का फंदा बन जाएगी। मेरी विष फुंकार आतंकवादियों को मौत की नींद सुला देगी। मैं विश्व से अपराध और आतंकवाद का खात्मा कर दूंगा।

नागराज के उपलब्ध कॉमिक

- नागराज
- नागराज की कब्र
- नागराज का बदला
- नागराज की हांगकांग यात्रा
- नागराज और शांगो
- खूनी खोज
- खूनी यात्रा
- नागराज का इंसाफ
- खूनी जंग
- प्रलयंकारी नागराज
- खूनी कबीला
- कोबरा घाटी
- बच्चों के दुश्मन
- प्रलयंकारी मणि
- शंकर शंहशाह
- नागराज का दुश्मन
- इच्छाधारी नागराज
- नागराज और कालदूत
- नागराज और जादूगर शाकूरा
- नागराज और बौना शैतान
- नागराज और ताजमहल की चोरी
- नागराज और लाल मौत
- ★ नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव
- नागराज और काबुकी का खजाना
- नागराज और थोडांगा
- नागराज और तूफान-जू
- ★ नागराज और नगीना का जाल
- नागराज और जादू का शहंशाह
- नागराज और बुगाकू
- नागराज और अजगर का तूफान
- बकोरा का जादू
- पिरामिडों की रानी
- ★ फिर आया नागदंत
- नागराज और मिस्टर 420
- ★ नागराज और नगीना
- थोडांगा की मौत
- नागराज और वेमबेम बिगेलो
- ★ नागराज और मिस किलर
- ★ विजेता नागराज
- ★ विसर्पी की शादी
- ★ शाकूरा का चक्रव्यूह
- ★ नागराज का अंत
- ★ जहर
- ★ नागपाशा
- ★ खजाना
- ★ क्राइमकिंग
- ● राजनगर की तबाही
- ★ विषकन्या
- ★ स्नेक पार्क
- ★ इच्छाधारी
- ★ केंचुली
- ● प्रलय
- ● विनाश
- ★ जहरीले
- ★ बांबी
- ● तानाशाह
- ● सूरमा
- ★ सपेरा

कोई भी छप्पन रुपए मूल्य या अधिक की कॉमिक आप हमसे डाक द्वारा घर बैठे मंगाएं। साथ ही प्राप्त करें एक आकर्षक गिफ्ट। कृपया छप्पन रुपए या अधिक का मनीआर्डर राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84 के पते पर भेजें। और अपनी मनपसंद कॉमिकों के नाम मनीआर्डर फार्म के निचले हिस्से में अपने पूरे पते के साथ साफ-साफ लिखकर भेजें।

राजनगर के आकाश में ध्रुव तारे के समान चमकता सितारा। अपराधियों के लिए मैं दहकता सूरज बन जाऊंगा।

सुपर कमाण्डो ध्रुव के उपलब्ध कॉमिक

- प्रतिशोध की ज्वाला
- रोमन हत्यारा
- आदमखोरों का स्वर्ग
- स्वर्ग की तबाही
- मौत का ओलम्पिक
- समुद्र का शैतान
- बर्फ की चिता
- रूहों का शिकंजा
- लहू के प्यासे
- महामानव
- वूडू
- मुझे मौत चाहिए
- बहरी मौत
- उड़नतश्तरी के बंधक
- एक दिन की मौत
- ★ ग्रेण्ड मास्टर रोबो
- विनाश के वृक्ष
- चैम्पियन किलर
- आखिरी दावं
- ★ आवाज की तबाही
- ★ खूनी खिलौने
- ★ किरीगी का कहर
- ★ चुम्बा का चक्रव्यूह
- वीडियो विलेन
- पागल कातिलों की टोली
- ★ डॉक्टर वायरस
- ★ सामरी की ज्वाला
- ब्लैक कैट
- रोबो का प्रतिशोध
- ★ आत्मा के चोर
- ★ वैम्पायर
- ★ सुप्रीमा
- दलदल
- उड़ती मौत
- चण्डकाल की वापसी
- ★ मैंने मारा ध्रुव को
- ★ हत्यारा कौन
- ★ सर्कस
- ★ हत्यारी राशियां
- ★ मौत के चेहरे
- ★ कमांडर नताशा
- ★ सजाए मौत
- ★ अंधी मौत
- ★ षड्यंत्र
- ★ महाकाल
- ★ खूनी खानदान
- ★ अतीत
- ★ जिग्सा
- ★ ध्रुव-शक्ति
- ★ जंग

- इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य 8/-
- ★ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य 16/-
- ● इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य 25/-

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक: राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084, फोन-7721410

दिल्ली में वितरक:
नागराज नावल्टीज, 313 दरीबा कलां, दिल्ली-110006, फोन-327835

Hii Dear Friends,
This is the community for all those
out their with a passion for RajComics..
for all those who are willing to support
the comics industry by purchasing new comics
and sharing the old gems with fellow comic lovers!

Let's bring Rajcomics to its former glory..
Let's bring back our childhood memories..
Let's together inherit the tradition..and share the janoon!

Here You will find all New and Old Comics of Nagraj,Dhruv,Doga,
Parmanu,Steel,Gamraj,Shakti,Kobi-Bhediya,Bhokal,Bankelal,
Chacha Chaudhary,Billoo,Pinki,Ram-Rahim,Crookbond,Tausi,
Angara,Jamboo, and Many Many Many more Super Heroes.

Catch Out New Set Releases first Only in RCJ Community..
And many more weekly and Monthly Comics Marathon/Utsav.

So come forward and join Our Comics Janoon Team
RAJCOMICS HAI MERA JANOON
http://www.orkut.co.in/Main#Community?cmm=41049580

संघर्ष, मनुष्य के जन्म के साथ ही जिसका जन्म हुआ, जो आदिकाल से अविरत चलता आ रहा है। कभी पाप और पुण्य के बीच, कभी मानव स्वतंत्रता के लिए तो कभी आसुरी शक्तियों को समाप्त करने के नाम पर यह संघर्ष निरन्तर जारी है। मनुष्य जाति के इतिहास में जहां अनगिनत राजा महाराजाओं के जीवन-मृत्यु के इस खेल को बढ़ावा दिया, वहीं सम्राट अशोक की अंतरात्मा ने इसमें हस्तक्षेप करके इसका विरोध भी किया और तब जन्म हुआ करुणा, दया और विवेक का, जिसकी परम्परा को आगे बढ़ाया आजीवन सत्य की खोज में असत्य से संघर्षरत रहने का वचन लेने वाले एक ऐसे महाबली योद्धा ने जिसका नाम है...

चिराग

कथा: कमलेश्वर. कॉमिक रूपांतर: हनीफ अजहर. ० चित्र: कदम स्टुडियो. ० संपादक: मनीष गुप्ता.

परीक्षा, जिसकी आग मनुष्य को फौलाद तो बनाती ही है साथ ही सामाजिक व सांसारिक संकटों से लड़ने का अनुभव भी देता करती है--
सुंदरगढ़ राज्य के दक्षिणी क्षेत्र के जंगल में बसे कबीले में भी आज आयोजित की गई है परीक्षा--
तभी तो गुरुकुल के प्रांगण में उपस्थित है कबीले का हर निवासी--

मंच पर मौजूद गुरुकुल के आचार्य शीघ्र ही कोई घोषणा करने वाले थे--
आचार्य पर ही लगी हुई थीं सभी की निगाहें-

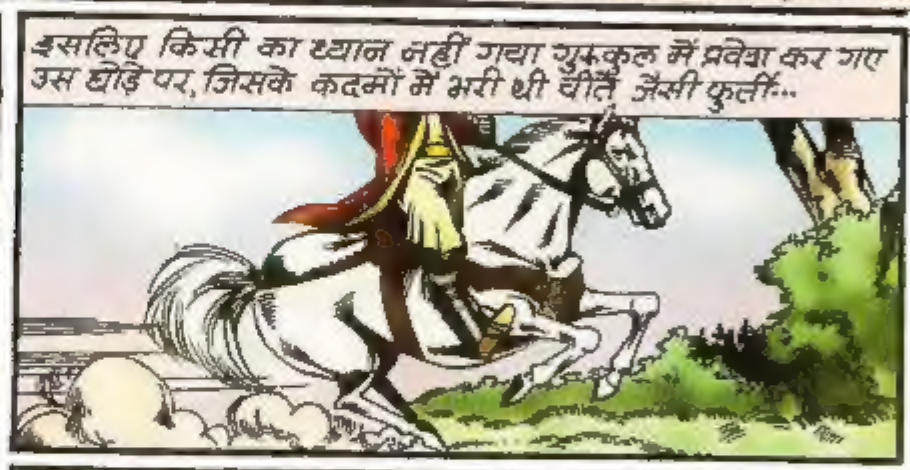
इसलिए किसी का ध्यान नहीं गया गुरुकुल में प्रवेश कर रहे उस घोड़े पर, जिसके कदमों में भरी थी चीते जैसी फुर्ती...

...और जिसके सवार के हाथों में मौजूद था बिजली-सा चमकता वह भाला...

...जो एक क्षण बाद ही हवा को चीरता नजर आया--
सर्रsss

और तब, जिसे भी वह भाला दिखा पथराकर रह गई वह निगाह क्योंकि--
सर्रर्र

भाले के लक्ष्य के रूप में सामने और कोई नहीं आचार्य ही थे--

लेकिन अगले ही क्षण उन सभी आखों में आतंक की जगह आश्चर्य का सागर दिखाई देने लगा क्योंकि...

भाले ने आचार्य के सीने को नहीं, उनके चरणों की धूल को अपना लक्ष्य बनाया था--
हमें तुम्हारा प्रणाम स्वीकार है...

...विराट!
हिन्नऽऽऽ हिन्नऽऽऽ

यही है गुरुकुल के आचार्य का चहेला शिष्य विराट!
सुना है सबसे योग्य है विराट।
उत्सुकता से विराट को देखते सभी को...

...आचार्य की आवाज ने चौंकाया--
जनपद के नागरिको और गणमान्य सज्जनों, वेद विद्या के बाद शस्त्र विद्या की यह परीक्षा विजया दशमी के पावन-पर्व पर हर वर्ष होती है। इस परीक्षा में हमारे शूरवीर स्नातकों से शस्त्र विद्या पाये हुमारे प्रिय शिष्य विराट को हुमारे देश के सबसे योग्य योद्धा से जूझना होगा।...

...और वह योद्धा है उसका सगा भाई सुनायक!

नगाड़ों और तुतहरी की आवाजों के बीच गूंजी आचार्य की आवाज--
तुऽऽ
दम दम दम
परीक्षा आरम्भ हो।

फिर वहां सन्नाटा छा गया, जिसे तोड़ा विराट और सुनायक के घोड़ों की टापों की आवाजों ने--

दप दप दप

दप दप दप

और तलवारों के भीषण टकराव ने--

टनाक

बचो विराट!

भइया! आपके इस घातक वार को नाकाम करते हुए मैं आपको प्रणाम करता हूं!

टनाक

सभी दम साधे उस मुकाबले को देख रहे थे--

जिसमें एक तरफ सुनायक था--

...तो दूसरी तरफ विराट था--

एक देश का सबसे योग्य योद्धा था--

...तो दूसरे ने अपनी योग्यता सिद्ध करनी थी--

लेकिन यह बात अपनी जगह स्थापित थी कि दोनों के शरीर में एक ही लहू दौड़ रहा था--

और वह लहू व्यर्थ बहे यह विराट को स्वीकार न था--

अब बस करो भइया! आपका सामना करते हुए मेरा हृदय कांपता है।

कायरों की तरह बातें मत करो विराट! भूल जाओ कि तुम अपने बड़े भाई सुनायक का सामना कर रहे हो। तुम्हें इस परीक्षा में उत्तीर्ण होना है।...

...और फिर जीवन कायरों का नहीं बहादुरों का सम्मान करता है।...

...तलवार चलाओ विराट!

विराट की मनोस्थिती को सुनायक ही नहीं...

...उसकी मंगेतर सुनयना भी समझ गई थी--

बाबा! सोचिए ज़रा भावनात्मक रूप से कितना कठिन होगा विराट के लिए अपने भाई से युद्ध करना।

बेटी, ये युद्ध नहीं परीक्षा है। ऐसी ही स्थितियों में होती है सच्चे युद्ध-कौशल की परीक्षा।

विराट के मित्र नटवर के लिए यह गर्व की बात थी...

शस्त्र विद्या में पूरी तरह निपुण हो गए हो विराट। जूझते रहो, तुम्हें अपने भइया को पराश्त करके ही रुकना है।

बचो!

ठनाक

सुनायक के उस घातक वार से विराट तो बच गया--

लेकिन उसका घोड़ा तूफान नहीं बच पाया--

तूफान!

तड़प उठा विराट अपने साथी का लहू देखकर--

क्रोध से चीख पड़ा वह--

अब रुक जाओ भैया!

तूफान की नहीं, अपनी परवाह करो विराट!

...संभलो!

ओह!

सुनायक के इस शक्तिशाली प्रहार ने...

...विराट को धूल चटा दी--

लेकिन विद्युत को मात कर देने वाली थी विराट की तेजी--

और सुनायक जैसे महान योद्धा को मात कर देने वाला था उसका वार--

ओह!

लेकिन ऐसे ही तो महान योद्धा नहीं बन गया था सुनायक --
शाबाश विराट!
टनाक
रुक जाओ!
इस बार तलवारों की टंकार के साथ वातावरण में वह आवाज भी गूंजी थी. .

. जिसने ठिठका दिया था दोनों योद्धाओं को -
बंद करो ये मारक खेल
भाभी!
शब्बी!
सुनायक की पत्नी शब्बी थी वह --

जो विराट और सुनायक के बीच दीवार बनकर आ खड़ी हुई थी -
मैं पूछती हूं मृत्यु का यह खेल किसके लिए खेला जा रहा है ?
यह मृत्यु का खेल नहीं शब्बी अपनी जन्मभूमि की रक्षा की तैयारी का खेल है !

इतना भीषण, इतना भयानक!
शब्बी। भीषण और भयानक ही होता है देश की रक्षा का दायित्व। तुम तो अच्छी तरह जानती हो हमारे इस दक्षिण प्रांत के चप्पे-चप्पे पर हीरो, पन्नों और -

माणिक, मोतियों की बहुमूल्य खदानें सिंधी है। बाहर और अंदर के शत्रु इन खदानों पर खाल लगाए बैठे हैं।...
.. हमारे पिता भी इसी पवित्र भूमि की रक्षा करते - करते मारे गये... समझने की कोशिश करो। तलवारबाजी का यह खेल जन्म - भूमि की रक्षा की तैयारी का खेल है...।
शक्ती, तुम बीच से हट जाओ।
इस खेल में तुम दोनों में से किसी से कोई चूक हो गई तो मैं किसका मुह देखकर जीवित रहूंगी।
दुश्मन के वार से दुश्मन मरता है। भाई के वार से भाई नहीं।
अपने को बचाओ विराट.
टनाक
ओह!
सुनायक के इस वार के साथ ही खूनी परीक्षा फिर शुरू हो गई थी...
. जो हर गुजरते पल के साथ भीषण होती जा रही थी--
टनाक
टन
हर खेल की तरह उस खेल को भी समाप्त होना ही था.
...लेकिन अचम्भित कर देने वाली थी उस खेल की समाप्ति --
विराट के एक जबरदस्त वार से सुनायक की तलवार उसके हाथ से छिटक गई थी...

.. जो अब उसके ही खून से रंगने जा रही थी-
लेकिन अपने ही खून को माटी में कहा मिल जाने देता वह हाथ--
जो विराट का हाथ था--
अइया!
विराट!
विराट उत्तीर्ण हुआ!
प्रसन्नता से झूम उठा सारा वातावरण--
हमारे नायक विराट की..
जय
अपने नायक की विजय पर सभी खुश थे--

लेकिन ममता अभी भी बेचैन थी -
कितने निष्ठुर भाई हो तुम! विराट के हाथ का घाव देखकर भी तुम्हारे कलेजे को ठंडक नहीं पड़ती।
भैया को क्यों भला बुरा कहती हो भाभी। छोटा-सा घाव है, एक दो दिन में भर जाएगा।

जानती हूं, तुम भी अपने बड़े बहादुर भाई के छोटे बहादुर भाई हो, किंतु तुम्हारे शरीर पर छोटा-सा घाव मेरे मन पर कितना बड़ा घाव बनाता है, पता है?
अपनी ममता को विराट की शक्ति बनाओ शक्ती कमजोरी नहीं

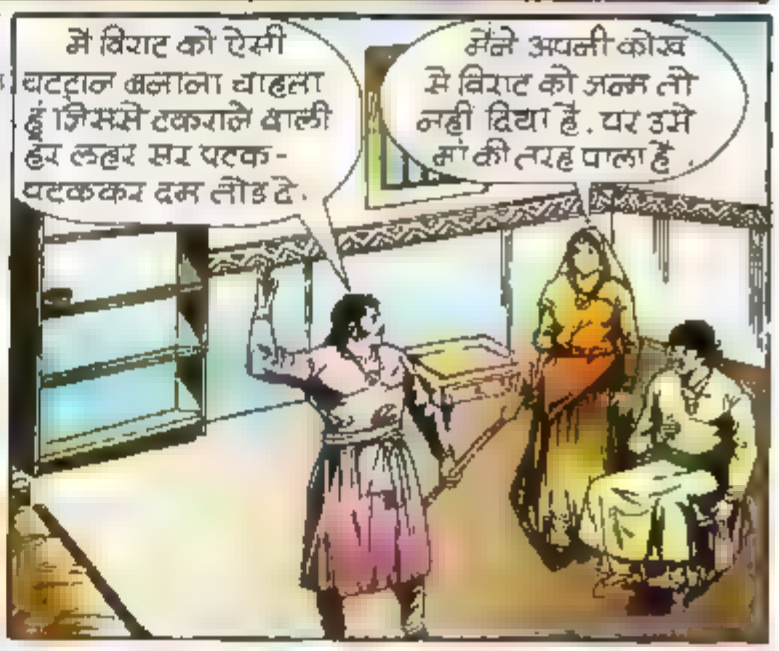
मैं विराट को ऐसी चट्टान बनाना चाहता हूं जिससे टकराने वाली हर लहर सर पटक-पटककर दम तोड़ दे.
मैंने अपनी कोख से विराट को जन्म तो नहीं दिया है, पर उसे मां की तरह पाला है.

मैं भी शत्रु नहीं विराट का, उसका बड़ा भाई हूं। देखो विराट की बाईं ओर बने शंख को और याद करो पुजारीजी की भविष्यवाणी, क्या कहा था उन्होंने विराट के जन्म पर ..
...विराट को वीरता और शूरता का असाधारण जीवन जीना है इसलिए इसके हृदय को भय से निर्भय करना मेरा लक्ष्य है।

मैं चलता हूं भैया। मुझे तूफान के घावों पर मरहम लगाना है।
ठीक है विराट, लेकिन इस कार्य को करने के बाद देवी चाण्डिका के मंदिर में पुजारी जी से मिलने अवश्य जाना। वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।
भैया और भाभी को बहस करता छोड़कर...

कर्ण ही नहीं
तुम साक्षात चण्डिका का अपमान कर रहे हो।
क्षमा करें पुजारीजी। अस्त्र-शस्त्रों का अस्वीकार किसी का अपमान नहीं है वे हाथ में ही आत्म के कवच होते है।
एक वीर शिकारी और योद्धा का पुत्र धनुष ग्रहण करने से इंकार कर रहा है।
दुविधा। तो तुम्हारी सगिनी है विराट यह तुम्हें हमेशा परेशान करती रहेगी क्योंकि तुम्हारा जन्म ही भादो मास के कृष्ण पक्ष में अष्टमी को हुआ है, जब सारे ग्रहण और शुभ नक्षत्र एक ही राशि में जमा हो गए थे।
मुझे तो लगता है पुजारीजी कि कालचक्र स्वयं मुझे घुमा रहा है मेरी समझ में नहीं आता मानवता और जीवन के सबसे बड़े शत्रु होकर भी..
ये शस्त्र मनुष्य के मित्र क्यों है?

शस्त्र किसी के मित्र या शत्रु नहीं होते विराट, मनुष्य स्वयं मानवता का मित्र या शत्रु बनता है। तर्क ने तुम्हारी बुद्धि को दूषित कर दिया है, जो तुम यह नहीं समझ पा रहे कि धर्म अधर्म, पाप-पुण्य से बहुत ऊपर होता है धर्म...

...धर्म ही मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है। तुम भी माँ चण्डिका के इस प्रसाद को ग्रहण करके अपना कर्तव्य निभाओ।

पुजारी जी ने निरुत्तर कर दिया था विराट को-

लेकिन उसकी आंखों में अभी भी बेचैनी के साथ-साथ प्रश्नों का सैलाब मौजूद था-

तभी तो वह उठ गई देवी की प्रतिमा की तरफ

देवी की आंखों में मानो विराट को अपने सभी प्रश्नों का उत्तर मिल गया-

आगे बढ़कर अपने हाथों में उठा लिया उसने धनुष को-

आशीर्वाद के लिए उठ गए पुजारी जी के हाथ-

तुम्हारा कर्तव्य ही तुम्हारा धर्म है विराट। जाओ अपने धर्म का पालन करो। मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है।

विराट की इस उपलब्धि का समाचार दक्षिण प्रांत के सभी कबीलों को लगना चाहिए।

पांssss

जो शंखनाद वातावरण को पुलकित कर रहा था...

. वह विराट के मस्तिष्क में भाले की नोक की भांति प्रवेश करता चला गया -

ओह!

गरम रेत पर पड़ी मछली की तरह तड़प उठा विराट -

ओ.ह.ह.ह.

पों sss

मस्तिष्क की हर नस से टकराने लगी वह आवाज -

विराट

विराट मेरे बच्चे

मां...

...और हलक फाड़कर चीख उठा-

मा... मां तुम कहां हो मां?

इधर उधर मुझे कहां देख रहा है मेरे बेटे! मैं मरी नहीं हूं विराट देख-देख मैं तो सदा की तरह अभी भी तेरे साथ हूं..

तू एक वीर योद्धा पिता का बेटा है, उनकी मृत्यु के बाद मैंने तुझे बड़े अरमानों से पाला था.. दुविधा में मत पड़ विराट!

पों sss

मां sss

तड़पकर अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ विराट...

विराट पागलों की तरह ना जाने कब तक चीखता रहता...

अगर सुनयना ने आकर उसे झकझोर ना दिया होता

विराट, विराट!

अतीत की दुनिया से वर्तमान के धरातल पर आया विराट –

अरे! सुनयना, तुम?

हाँ, मैं.

लेकिन तुम्हें क्या हुआ था?

कहाँ खो गये थे तुम?

शंख की आवाज।

ओफ्फ!

शंख की आवाज सुनकर मुझे पता नहीं क्या हो जाता है सुनयना, मुझे लगता है मेरी माँ मुझे पुकार रही है।.

मुझे आवाज दे रही है और. और मुझसे बहुत कुछ कहना चाहती है!

यदि तुम्हारी माँ तुमसे कुछ कहना चाहती है तो उसे समझने की कोशिश करो ..

.. पर पूरी बात कह नहीं पाती।

कोशिश करोगे तो जरूर समझ जाओगे कि..

.. तुमसे कौन क्या-क्या कहना चाहता है

ओह! तुम्हारे चेहरे पर एकाएक कैसे गई लज्जा की लाली संकेत कर रही है कि शायद तुम भी मुझसे कुछ कहना चाहती हो ...

कहो सुनयना तुम क्या कहना चाहती हो?
म.. मैं..
लज्जा से सुनयना अपने मनोभाव से अपने दिल की कोई बात कह पाती

...उससे पहले ही विराट का मित्र नटवर वहां आ पहुंचा -
तुम यहां हो विराट, और हम तुम्हें पूरे कबीले में ढूंढते फिर रहे हैं।
तुम इतना घबराये हुए क्यों हो नटवर...?

क्या बात है?
बात यह है विराट के दक्षिण प्रांत में भयानक जादू करने वाला एक भयानक जादूगरनी यहां हमारे कबीले में घुस आया है..

कबीले की एक लड़की को उठाकर ले गया।
वह बड़ा भयानक यति है विराट, बहुत-सी जानें ले चुका है वह।

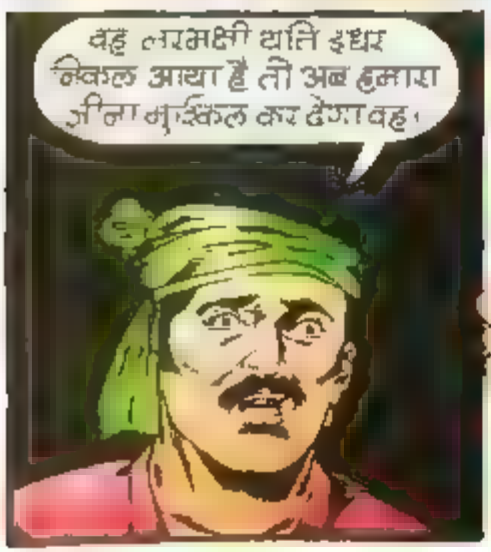
वह जादूगरनी यति इधर निकल आया है तो अब हमारा जीना मुश्किल कर देगा वह।

क्रोध से कड़क उठी विराट की भुजाएं, क्रोध से भभक उठा उसका चेहरा -
किसी को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, विराट वचन देता है कि

आपके मनपसंद पात्रों नागराज, ध्रुव, डोगा, परमाणु, शक्ति, स्टील, बांकेलाल, भोकाल व उनके विलेन्स के सौ अलग-अलग टैटू स्टीकर

सभी टैटू स्टीकर
इस चित्र में दिखाए साइज
जितने बड़े हैं।

अलग-अलग पात्रों के 100 टैटू स्टीकर मंगवाने के लिए 50/- रु. का मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट निम्न पते पर भेजें: **नागराज नावल्टीज, 313 दरीबा कलां, दिल्ली-110006.**

वाह! क्या नागराज नोट बुक है मन करता है बस लिखता ही रहूं

आज ही अपने शहर के कॉमिक विक्रेता स्टेशनरी शाप से खरीदें। न मिलने पर हमसे सम्पर्क करें।

नागराज नावल्टीज
330/1 बुराड़ी दिल्ली.84.
फोन नं.7221410
313, दरीबा कलां, दिल्ली-6
फोन नं. 3278397

... आज के बाद
किसी की भी जान
नहीं ले पायेगा वह

..."नरभक्षी यति"
हर्रर्रsss
काल का साक्षात अवतार!
प्रलय का दूसरा रूप था वह नरभक्षी यति
जिसे ललकारने का एक ही अर्थ था मृत्यु को निमंत्रण देना।

लेकिन इस बात से कहां घबराते हैं वो, जो अपनी भुजाओं में रखते हैं प्रलय को रोक लेने की शक्ति और सीने में रखते हैं काल को भी ललकारने का साहस –

रुक जाओ!

ठिठककर रह गए दानि की जलती आंखों में आश्चर्य के भाव थे और वे भाव नैचरल ही इसलिए थे कि कोई मनुष्य न सिर्फ उसके सामने अडिग पर्वत की भांति खड़ा है बल्कि

हर्रSSS

हर्रSSS

उसे ललकार भी रहा है --

छोड़ दो लड़की को!

हर्रSSS

हुर्रर्र

उत्तर में गूंजी लहू को जमा देने वाली चीत्कार ...

...और हुआ वह भीषण प्रहार!

भड़ाक

.. जो किसी साधारण मनुष्य पर हो जाता तो वह अगले भर उठ नहीं पाता—

लेकिन वह विराट था जिसके पास मौजूद था फौलादी जिस्म और...

...अपने शत्रु को मुंहतोड़ जवाब देने का हौसला—

लेकिन इसका क्या किया जाये कि अमानवीय शक्ति का जीता - जागता उदाहरण था...

.. वह नरभक्षी...
भड़ाक
ओफ्फ!
जिसके शरीर में था हाथियों को भी पछाड़ देने का बल .
और बाँहों में थी कौलाद को भी चकनाचूर कर देने की क्षमता .
भड़ाक
अ हैं!
लेकिन विराट के उस हौंसले को तोड़ देने की शक्ति नहीं थी उसके पास . जिसके बल पर वह अभी भी उससे जूझा हुआ था .
.. उसके वारों का प्रत्युत्तर दे रहा था .
.. उसके भीषण प्रहारों को सह रहा था—

इस बार संभलते हुए विराट की नजर उस प्रतिमा पर जा पड़ी।

मां चण्डिका

प्रणाम के लिए स्वयं ही जुड़ गए उसके हाथ, कंठ से निकल गए श्रद्धा से भरे वे शब्द -

मां चण्डिके आशीर्वाद दे अपने इस भक्त को ताकि वह मानवता की शत्रु, एक दुष्ट शक्ति का संहार कर सके।

आशीर्वाद दे मां।

आशीर्वाद दे।

पूरे सम्मान और श्रद्धा से देवी के चरणों में झुकता चला गया उस भक्त का शीश।

अब भला कैसे ना मिलता उसे वह आशीर्वाद –

आपका आशीर्वाद पाकर मैं धन्य हुआ मां।

क्षणभर में नहीं लगाया विराट ने उस त्रिशूल का संभालने और

उसे विनाश के उस दूत की तरफ उछाल देने में –

काल का सर्द सर्द संगीत उत्पन्न करता वह त्रिशूल-

सर्र सर्र

कब नरिंदे ने थककर हताश होकर वहां से पीठ फेर गया

स्वच्छ

और कब प्राण पखेरू ले उड़ा, नरभक्षी यति को इसका पता ही नहीं चला

शांत

क्षण भर के एक बहुत बड़े आतंक का अन्त हो चुका था।

वहां के निवासियों के लिए यह हर्षोल्लास की बात थी -

धम् धम् धम्

विराट... हमारा रक्षक विराट

हरेक की जुबान पर विराट का नाम था-

विराट की भावी शक्ति के तो जैसे कदम ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे-

विराट ने नरभक्षी यति को अकेले ही मार गिराया है ...

कितना बलवान है अपना विराट!

मैंने जो कहा था वही हुआ

... अब देखना अपने विराट की वीरता की ख्याति चारों दिशाओं में फैल जाएगी।

सचमुच विराट के इस कारनामे की चर्चा दूर-दूर तक पहुंच चुकी थी.

. और इसका प्रमाण थे ये घुड़सवार...

जो सैनिक विराट के घर के सामने पहुंचकर रुके थे -

तुममें से विराट कौन है ?

मैं हूं विराट

तुम्हें सेनापति कालभैरव ने बुलाया है।

उत्तर में विराट कुछ बोल पाता...

...उससे पहले ही पुजारीजी बोल उठे-

लगता है तुम्हारी वीरता की खबर सेनापति को भी हो चुकी है, उसने तुम्हें अवश्य ही नरभक्षी यति को मारने का पुरस्कार देने के लिए बुलाया है

पुरस्कार इतनी शत्रु नहीं दिये जाते पुजारीजी, अवश्य ही कोई और कारण है.

विराट घुड़सवारों की तरफ पलटा -

सैनिको, जाकर अपने सेनापति कालभैरव से कह दो कि आज नहीं, लेकिन शीघ्र ही मैं उनके समक्ष प्रस्तुत होऊंगा।

विराट का उत्तर पाकर सैनिक वापस लौट गये।

इधर सुन्दरगढ़ का सेनापति साक्षात काल का अवतार बना हुआ था

काल भैरव तुझे ऐसी सजा देगा, जिसे तू जीवन भर नहीं भुला पाएगा।

क्षमा सेनापति जी क्षमा कर दो.

तुझे क्षमा करें दूं, हमारे गुप्तचर के रूप में तुझे राजगुरु और उसकी बेटी मीनाक्षी पर नजर रखने को कहा था, लेकिन वे तेरी आखों में धूल झोंककर न जाने कहां गायब हो गए, तब हमने तुझे क्षमा कर दिया था। लेकिन इस बार...

...नरभक्षी यति की खबर हम तक आ पहुंचाकर तूने ऐसा अपराध किया है, जिसके लिए कालभैरव तुझे कभी क्षमा नहीं कर पाएगा।...

अगर नरभक्षी यति को मैंने मार दिया तो दक्षिण क्षेत्र की जनता का दिल जीत लेना इस क्षेत्र में कालभैरव से बड़ा वीर कालभैरव नहीं बनने देगा।

विराट के पिता वीरबाहु ने भी यही गलती की थी तो हमने उसे हमेशा-हमेशा के लिए रास्ते से हटा दिया था..

इस नरभक्षी यति के शिकारी विराट का हाल भी उसके पिता जैसा ही होगा लेकिन पहले तुझे तेरी करनी का दंड मिलेगा

तो वापस न आ सका..

जिसके स्वामी को देखकर चोट खाए नाग की भांति फुफकार उठा था कालभैरव-

कौन हो तुम ?

वही जिसके अपराध का दंड इस निर्दोष को दिया जा रहा है।

इस बार उसे कालभैरव के हाथ से बचा कोई लहराया

क्योंकि इस बार उस हवा से ही थाम लिया था उस हाथ ने

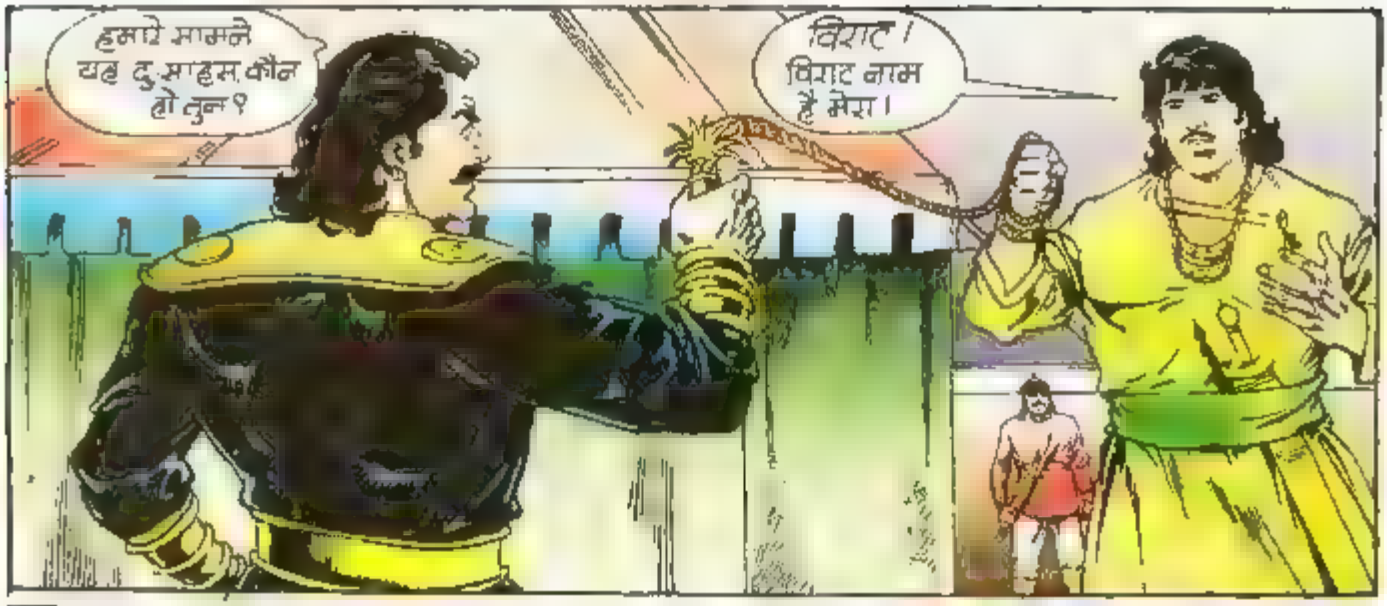
हमारे सामने यह दुःसाहस कौन हो तुम?
विराट! विराट नाम है मेरा।

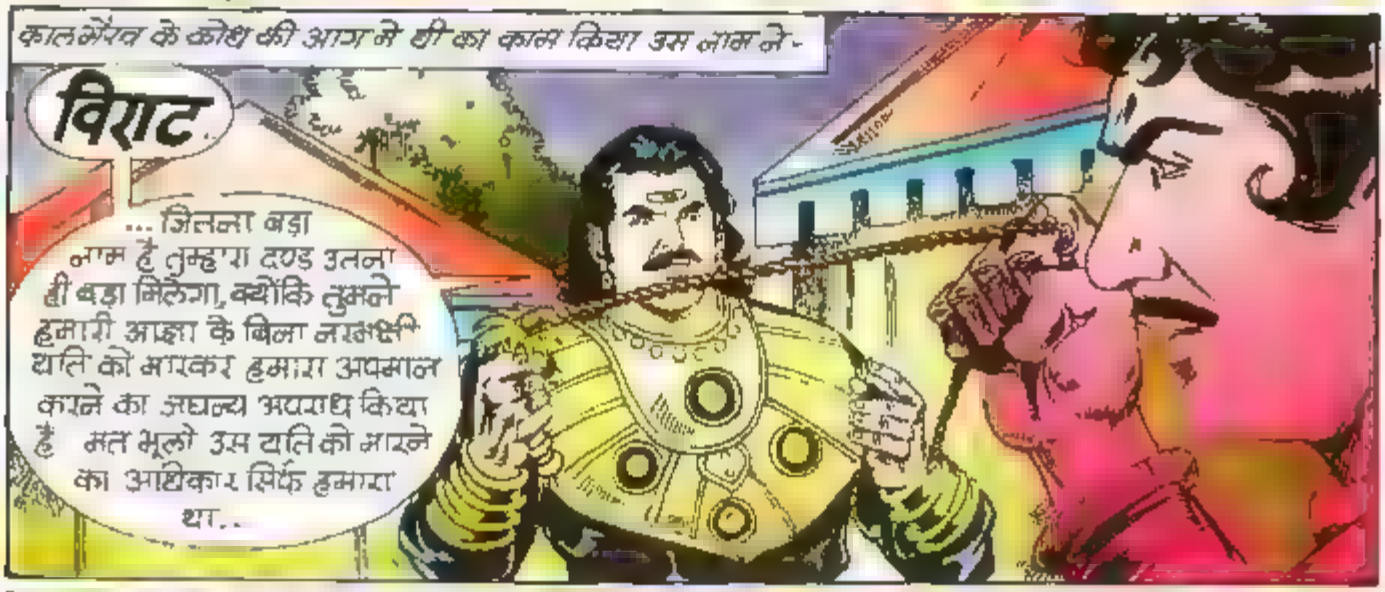
कालभैरव के कोप की आग ने ही का काम किया उस नाम ने -
विराट
...जितना बड़ा नाम है तुम्हारा दण्ड उतना ही बड़ा मिलेगा, क्योंकि तुमने हमारी आज्ञा के बिना नरभक्षी यति को मारकर हमारा अपमान करने का अक्षम्य अपराध किया है मत भूलो उस यति को मारने का अधिकार सिर्फ हमारा था..

...लेकिन तुम्हारे इस अपराध को हम क्षमा कर सकते हैं। अगर तुम तत्काल हमारे सामने अपना शीश झुकाकर हमसे क्षमा माँगो!
अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो इसी कौड़े से हम तुम्हारी चमड़ी उधेड़ देंगे।
विराट का शिर या तो भगवान के सामने झुकता है या राजा के, और किसी के सामने नहीं, फिर भी अगर आपको मेरी चमड़ी उधड़ने का शौक है तो...

छुड़ा लीजिए इस कोड़े को मेरे हाथ से और उठेड़ दीजिए मेरे शरीर का सारी चमड़ी

विराट के शब्दों में एक चुनौती छिपी हुई थी।

जिसे पूरा करने से पीछे कहा हटता सेनापति कालभैरव

कोड़े को विराट के हाथ से छुड़ाने के लिए उसने शक्ति लगानी शुरू की..

और उस ही से छीन लेना चला गया

लेकिन अपनी शक्ति के एक एक कतरे के इस्तेमाल के बाद भी वह कोड़े को खींचने में सफल नहीं हो पाया -

जबकि विराट के हल्के से झटके के साथ ही कालभैरव खिंचता हुआ उस तक आ पहुंचा --

ओह !

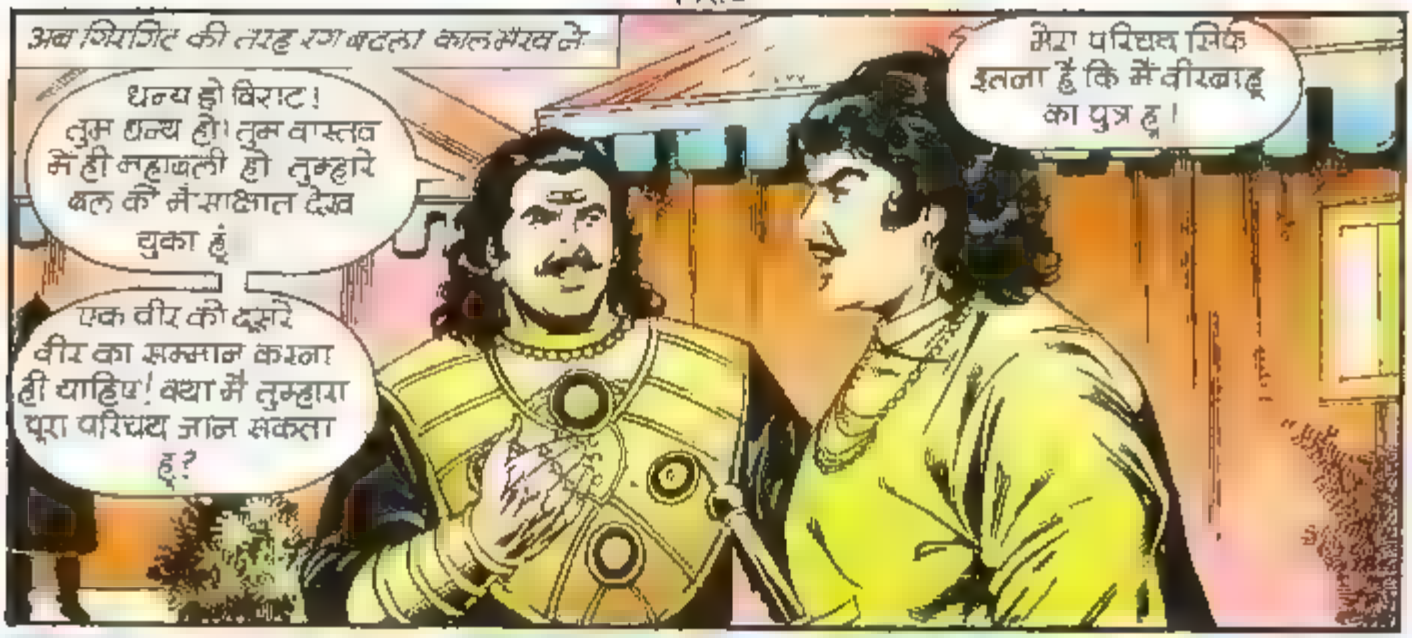
अब गिरगिट की तरह रंग बदला कालभैरव ने
धन्य हो विराट! तुम धन्य हो। तुम वास्तव में ही महाबली हो तुम्हारे बल को मैं साक्षात देख चुका हूं
एक वीर को दूसरे वीर का सम्मान करना ही चाहिए! क्या मैं तुम्हारा पूरा परिचय जान सकता हूं?
मेरा परिचय सिर्फ इतना है कि मैं वीरबाहु का पुत्र हूं!

ओह, दक्षिण-क्षेत्र के महान योद्धा वीरबाहु के पुत्र हो तुम। इससे पहले तुम्हें कभी नहीं देखा था इसलिए पहचान नहीं सका, लेकिन तुम्हारे बड़े भाई सेनायक को अच्छी तरह पहचानता हूं मैं ...

... मुझे विश्वास है अपने पिता की तरह तुम भी वीरता और यश की पताका फहराओगे
आज से मैं तुम्हें अपना मित्र और भाई स्वीकार करता हूं...

...और इसके प्रतीक के रूप में मैं तुम्हें यह राजमुद्रिका देता हूं। और साथ ही तुम्हें राजधानी आने का निमंत्रण भी देता हूं।
राजमुद्रिका के लिए धन्यवाद सेनायक्ष जी मैं शीघ्र ही राजधानी आकर आपसे मिलूंगा।
फिर खड़ा रहा विराट!

मैं तुम्हें ही प्रतीक्षा कालभैरव विराट

कालभैरव के चेहरे पर मौजूद शैतानी चमक स्पष्ट बता रही थी कि वह विराट के विरुद्ध कोई षड्यंत्र रच रहा था।

जिसे उप-सेनापति दुर्जन सिंह तुरन्त भांप गया–

आपकी ये कूटनीतिक समझ में नहीं आई सेनापति जी आपने उस सपोले को यूं ही जाने दिया ?

वह सपोला नहीं विषैला नाग है दुर्जन, याद है दक्षिणी क्षेत्र में आकर उसके पिता की हत्या करने में हमें कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था।

मैं कैसे भूल सकता हूं मैंने भी आपके साथ ही था, थोड़े से मारना पड़ा था उसे

हां दक्षिणी क्षेत्र की बेशकीमती खनिज सम्पदा और हीरे मोतियों की खदानों पर उसी वीरबाहु का कबीला सांप की तरह कुंडली मारे बैठा था। उस पर विराट नाम का यह एक नया नाग और बैठा हो गया।...

..एक बार यह नाग अपने बिल से निकल कर हमारी राजधानी पहुंच जाए फिर हमारे लिए उसका फन कुचलना बेहद आसान हो जाएगा।

समझ गया सेनापति जी, आपकी चतुराई बेजोड़ है। बेचारा विराट क्या टिक पाएगा आपके सामने।

लेकिन आपने उसे राजमुद्रिका क्यों दी ?

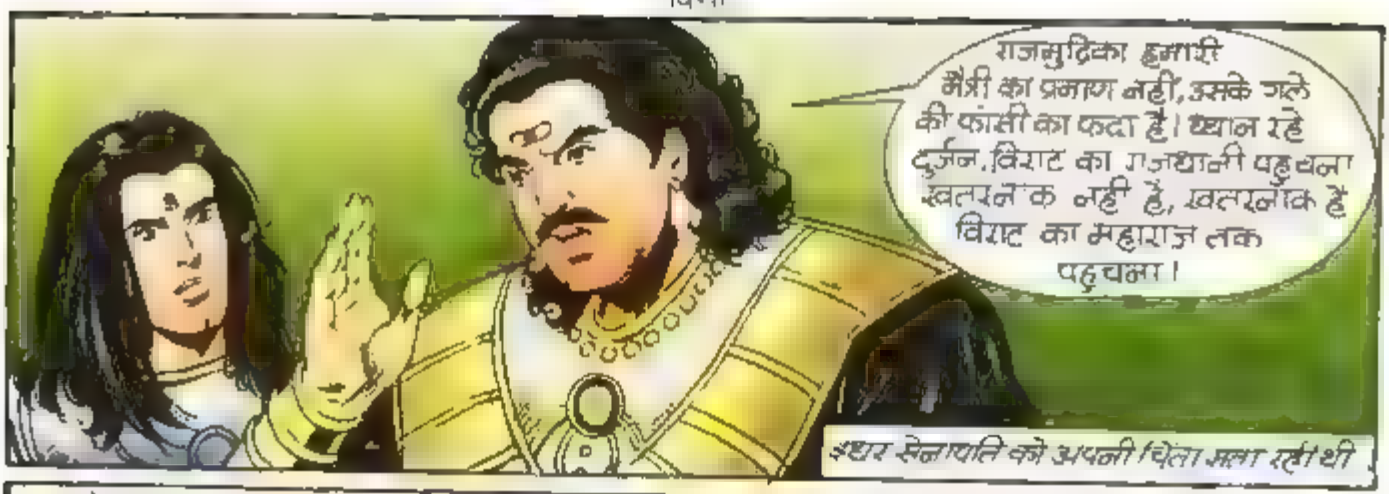
राजमुद्रिका हमारी मैत्री का प्रमाण नहीं, उसके गले की फांसी का फंदा है। ध्यान रहे दुर्जन, विराट का राजधानी पहुंचना खतरनाक नहीं है, खतरनाक है विराट का महाराज तक पहुंचना।
उधर सेनापति को अपनी चिंता सता रही थी

और इधर राजधानी में महाराज विजय सिंह को राज्य की चिंता सोने नहीं दे रही थी-
महाराज! मैं देख रही हूं आप कुछ दिनों से अशान्त रहते हैं।
हां महारानी सुन्दरगढ़ का महाराजा विजयसिंह आज-कल एक साधारण नागरिक से भी ज्यादा अशान्त है और उसका कारण है, राज्य में अचानक घटने वाली अनहोनी घटनाएं। हमारे आदरणीय राजगुरू दत्तात्रेय अपनी बेटी मीनाक्षी के साथ ना जाने कहां गायब है....

... और आपके भाई सेनापति कालभैरव हमसे आज्ञा लिये बिना ना जाने कहां चले गये हैं। राज्य का सेनापति लापता है।
कालभैरव लापता है, ऐसा कैसे हो सकता है।

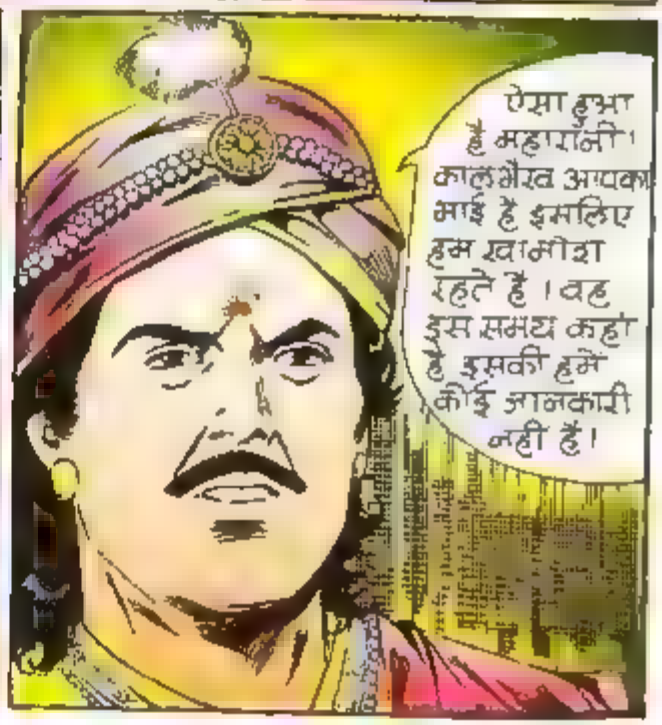
ऐसा हुआ है महारानी। कालभैरव आपका भाई है इसलिए हम खामोश रहते हैं। वह इस समय कहां है, इसकी हमें कोई जानकारी नहीं है।

तभी वहां एक सैनिक उपस्थित
महाराज की जय हो महामंत्री पधारे हैं।
उन्हें आदर सहित अन्दर ले आओ।

कुछ ही क्षणों बाद महाराज के सामने मौजूद था महामंत्री।
कहिए महामंत्री! कैसे आना हुआ?
राज्य में फैल रही कुछ शंकाओं को लेकर उपस्थित हुआ हूं महाराज से अफवाह आग की तरह फैल रही है कि राजगुरु की हत्या कर दी गई है और साथ ही लोग कालभैरव के गायब होने के कारण तरह-तरह के अनुमान लगा रहे हैं।

उधर आपके राजदरबार में ना आने से सम्राट के कान खड़े हो गए हैं कि कहीं युद्ध तो नहीं होने वाला है?
हम भी इन्हीं प्रश्नों में उलझे हुए हैं महामंत्री समझ में नहीं आता कालभैरव और राजगुरु हमें छोड़कर अचानक कहां चले गए?

आपकी आज्ञा हो तो उनकी खोज में हरकारे भिजवा दिए जाएं?
इसकी आवश्यकता नहीं है महामंत्रीजी।

.. मैं स्वयं उपस्थित हूं।
महाराज की जय हो।

कपट और झूठ से भरा हुआ था कालभैरव का एक एक शब्द-
दक्षिणी क्षेत्र में एक नरभक्षी यति ने उत्पात मचा रखा था कई लोग मारे जा चुके थे। प्रजा की पुकार सुनकर मैं उसे मारने वहां जा पहुंचा। रात्रि का समय होने के कारण मैं आपसे आज्ञा नहीं ले पाया, इसके लिए क्षमा चाहता हूं
अब इसकी आवश्यकता नहीं है सेनापति ...

नरभक्षी यति को समाप्त करके आपने अपनी वीरता का जो परिचय दिया हम उससे प्रसन्न हुए
अब हम तुम्हें... एक उत्तरदायित्व और सौंपना चाहते हैं।

राजगुरू दत्तात्रेय और उनकी पुत्री मीनाक्षी का पता लगाओ। प्रजा की शंका का निवारण करने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है
जो आज्ञा महाराज
सेनापति कालभैरव कक्ष से बाहर निकल गया।

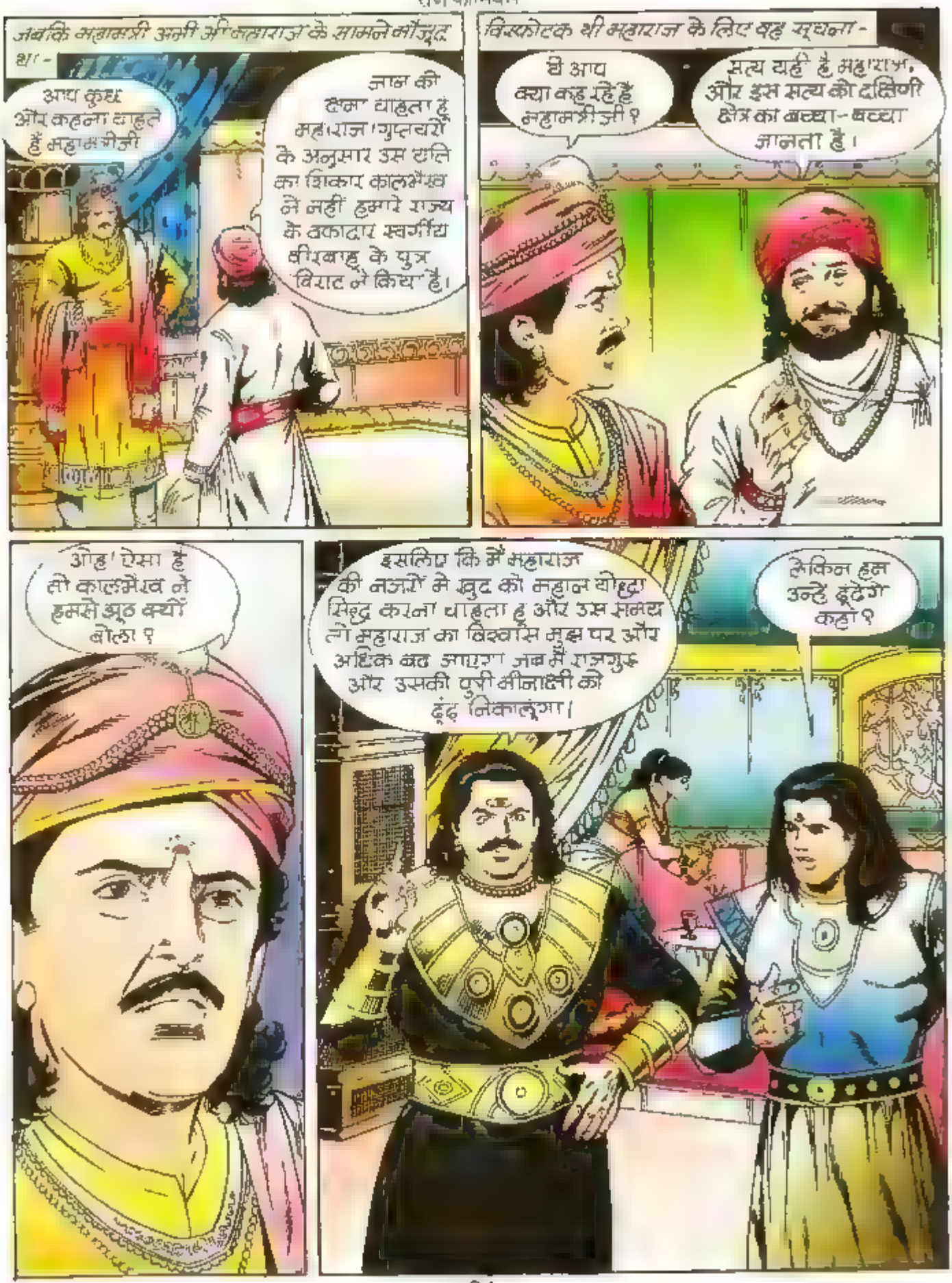
जबकि महामंत्री अभी महाराज के सामने मौजूद था -
आप कुछ और कहना चाहते हैं महामंत्रीजी
ज्ञात की सेवा चाहता हूं महाराज! गुप्तचरों के अनुसार उस हाथी का शिकार कालभैरव ने नहीं हमारे राज्य के सरदार स्वर्गीय वीरबाहु के पुत्र विराट ने किया है।
विदूषक भी महाराज के लिए यह सूचना -
ये आप क्या कह रहे हैं महामंत्रीजी ?
सत्य यही है महाराज, और इस सत्य को दक्षिणी क्षेत्र का बच्चा-बच्चा जानता है।
ओह! ऐसा है तो कालभैरव ने हमसे झूठ क्यों बोला ?
इसलिए कि मैं महाराज की नजरों में खुद को महान योद्धा सिद्ध करना चाहता हूं और उस समय तो महाराज का विश्वास मुझ पर और अधिक बढ़ जाएगा जब मैं राजगुरु और उसकी पुत्री मीनाक्षी को ढूंढ निकालूंगा।
लेकिन हम उन्हें ढूंढेंगे कहां ?

कहीं से भी, लेकिन उन्हें ढूंढना अत्यंत आवश्यक है और ऐसा क्यों है ये तुम अच्छी तरह जानते हो दुर्जन?
राजगुप्त और उसकी पुत्री का मिलना आपके लिए कितना आवश्यक है, मैं अच्छी तरह जानता हूं सेनापतिजी...

आप सुन्दरगढ़ के भावी महाराज हैं और मीनाक्षी आपकी होनेवाली भावी महारानी! मैं भावी महारानीको भावी महाराज से मिलवाऊंगा

तभी तो मैं सुन्दरगढ़ का सेनापति बनूंगा
शाबाश दुर्जन! अपने आदमियोंको चारों तरफ दौड़ा दो, मुझे हर हाल में चाहिए...

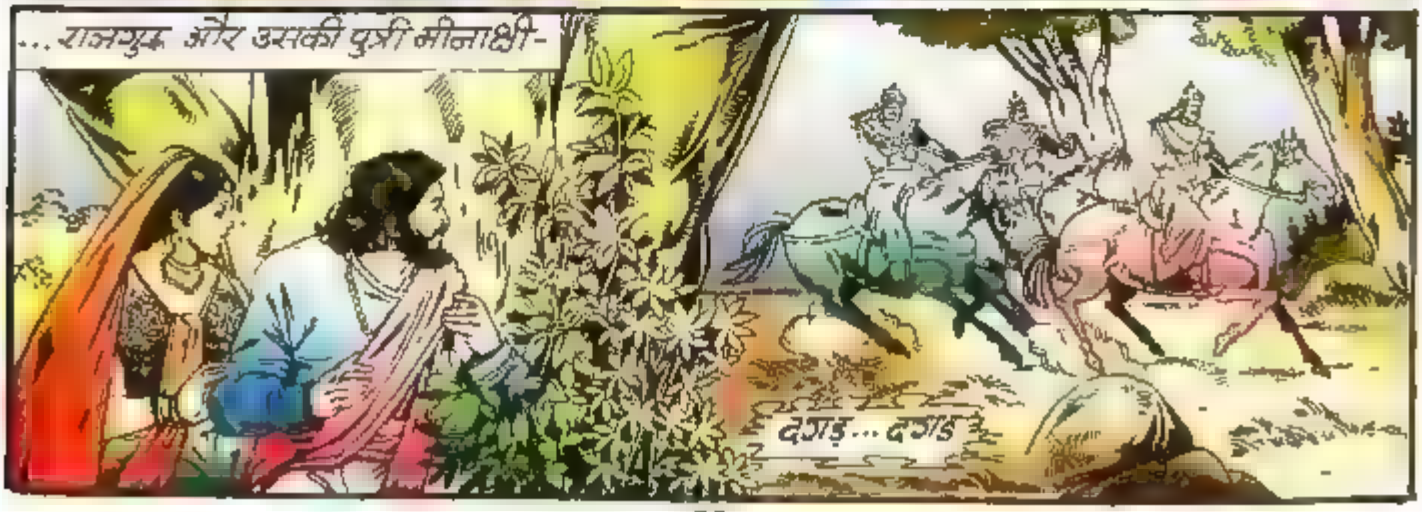
...राजगुप्त और उसकी पुत्री मीनाक्षी-
दगड़... दगड़...

आचार्य! हमारी खोज में काल भैरव के सैनिक चारों तरफ घूम रहे हैं चेताजी?
तुम ठीक कह रही हो बेटी, लेकिन वे हमें ढूंढ़ पाए उससे पहले ही हम दक्षिणी क्षेत्र पहुंच जाएंगे।

वहां के कबीले का पुजारी मेरा मित्र है। तेरी ही उम्र की उसकी एक पुत्री भी है सुलोचना। वह हमारी सहायता अवश्य करेगा।

आओ!
चेता पुत्री एक बार फिर भाग खड़े हुए।

और दुर्जन व उसके साथी एक बार फिर खाली हाथ वापसे लौट चले–

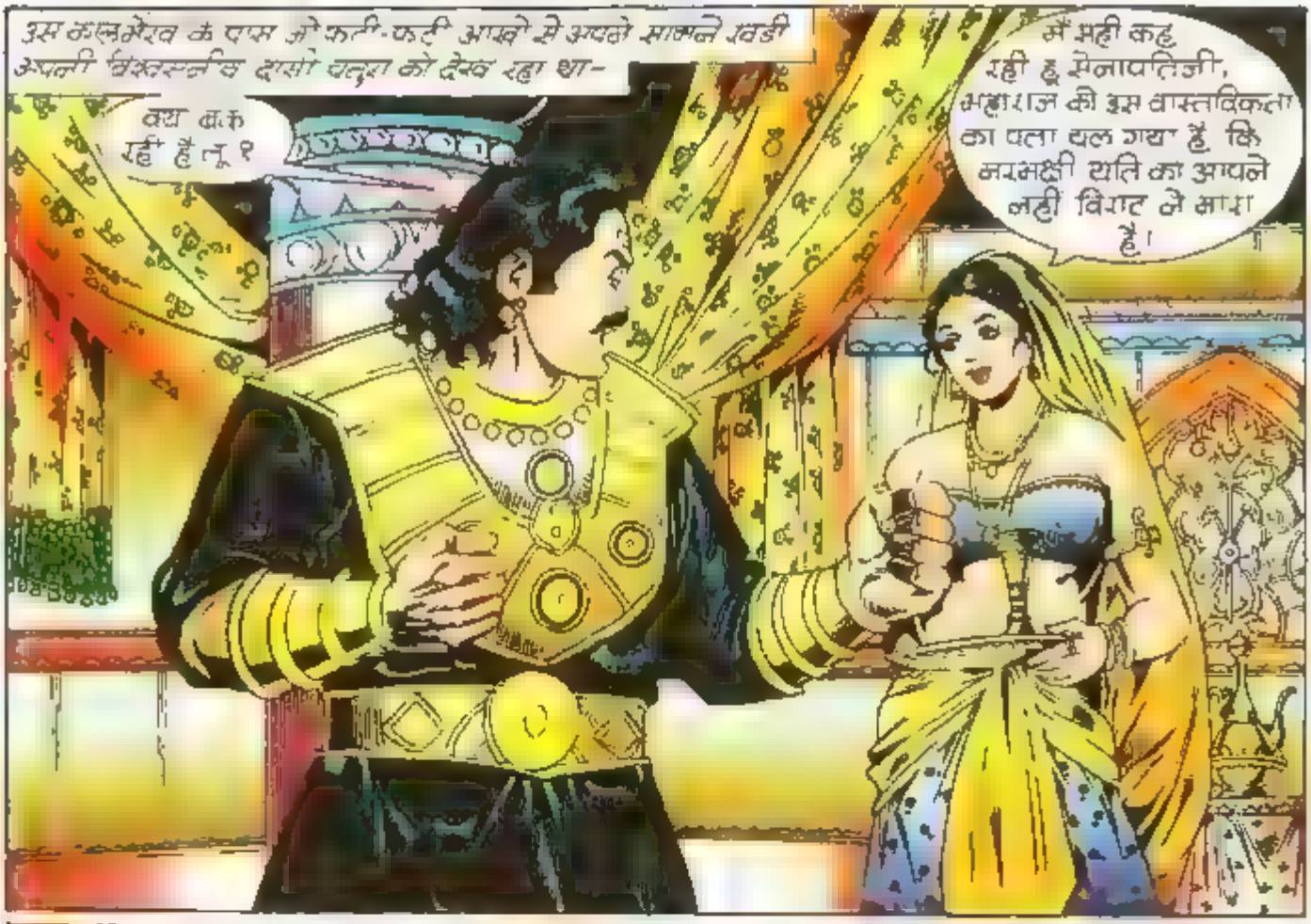
उस कालभैरव के पास जो फटी-फटी आंखों से अपने सामने खड़ी अपनी विकरालरूपिणी दासी चंद्रा को देख रहा था-
क्या बक रही है तू ?
मैं यही कह रही हूं सेनापतिजी, महाराज की इस वास्तविकता का पता चल गया है कि मत्स्यक्षी यति का अपने नहीं विराट के भाई का है।

सेनापति कालभैरव को झकझोर दिया था उस सूचना ने.

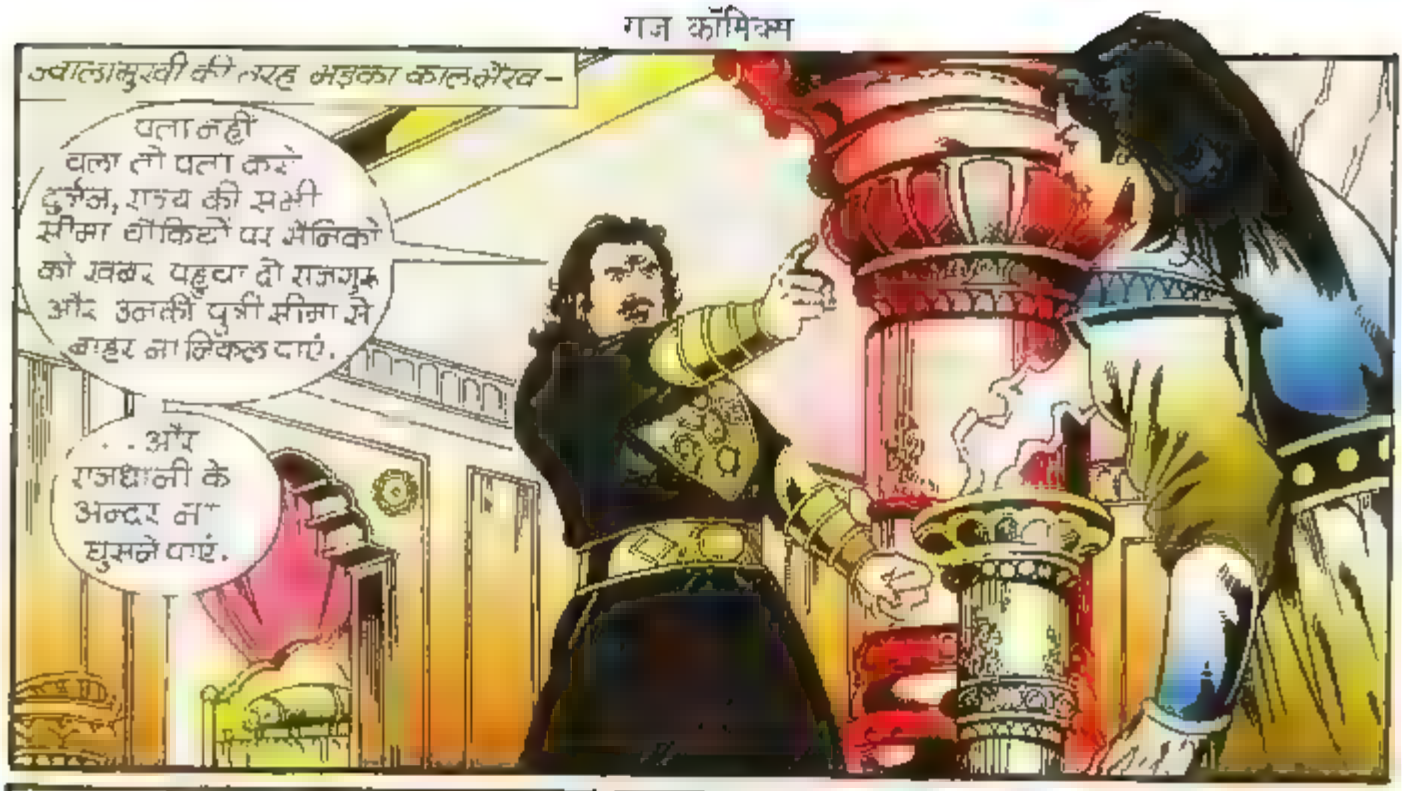
ज्वालामुखी की तरह भड़का कालभैरव –
पता नहीं चला तो पता करो दुर्जन, राज्य की सभी सीमा चौकियों पर सैनिकों को खबर पहुंचा दो राजगुरु और उनकी पुत्री सीमा से बाहर ना निकल पाएं.
. . . और राजधानी के अन्दर न घुसने पाएं.

". . विराट .!"
अपने घोड़े तूफान को तूफान की तरह भगाकर विराट ने राजधानी में प्रवेश किया.

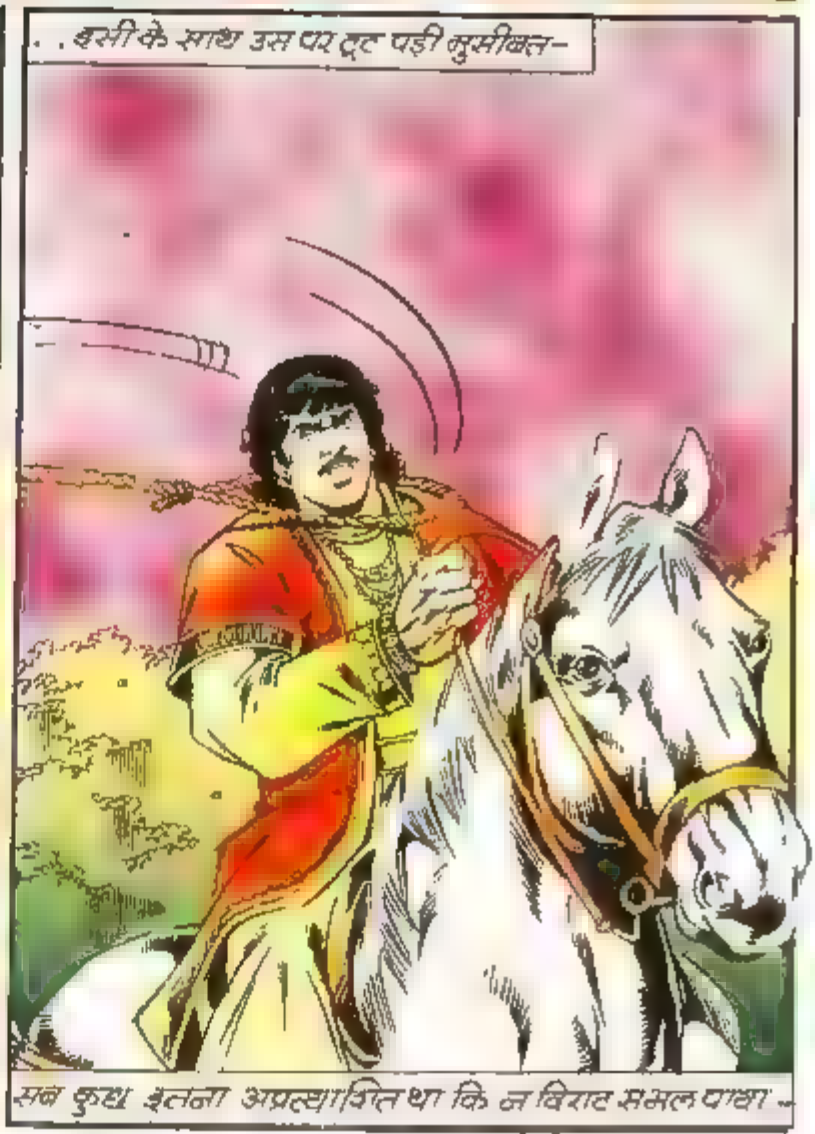
. . इसी के साथ उस पर टूट पड़ी मुसीबत –
सब कुछ इतना अप्रत्याशित था कि न विराट संभल पाया –

... और न उसे सम्भलने का अवसर मिला
पलक झपकते ही एक रस्सी के तेज झटके ने उसे जमीन पर ला पटका।...
... और तब उसे नजर आया दुर्जन -
ये सेनापति कालभैरव की आज्ञा है कि तुम नगर में प्रवेश नहीं कर सकते।
सेनापति राजमुद्रिका देकर राजधानी बुलाते हैं और उसी सेनापति के सैनिक रास्ते की दीवार बनकर खड़े हो जाते हैं ..
इसका अर्थ तो यह है कि इस रास्ते पर कोई दोहरी चाल चल रहा है।

कुछ रास्ते सभी के लिए नहीं होते विराट. उन पर चलने से पहले आज्ञा की आवश्यकता होती है.
मगर विराट जिस रास्ते पर चलता है, किसी की आज्ञाओं से नहीं अपनी इच्छाओं से चलता है...

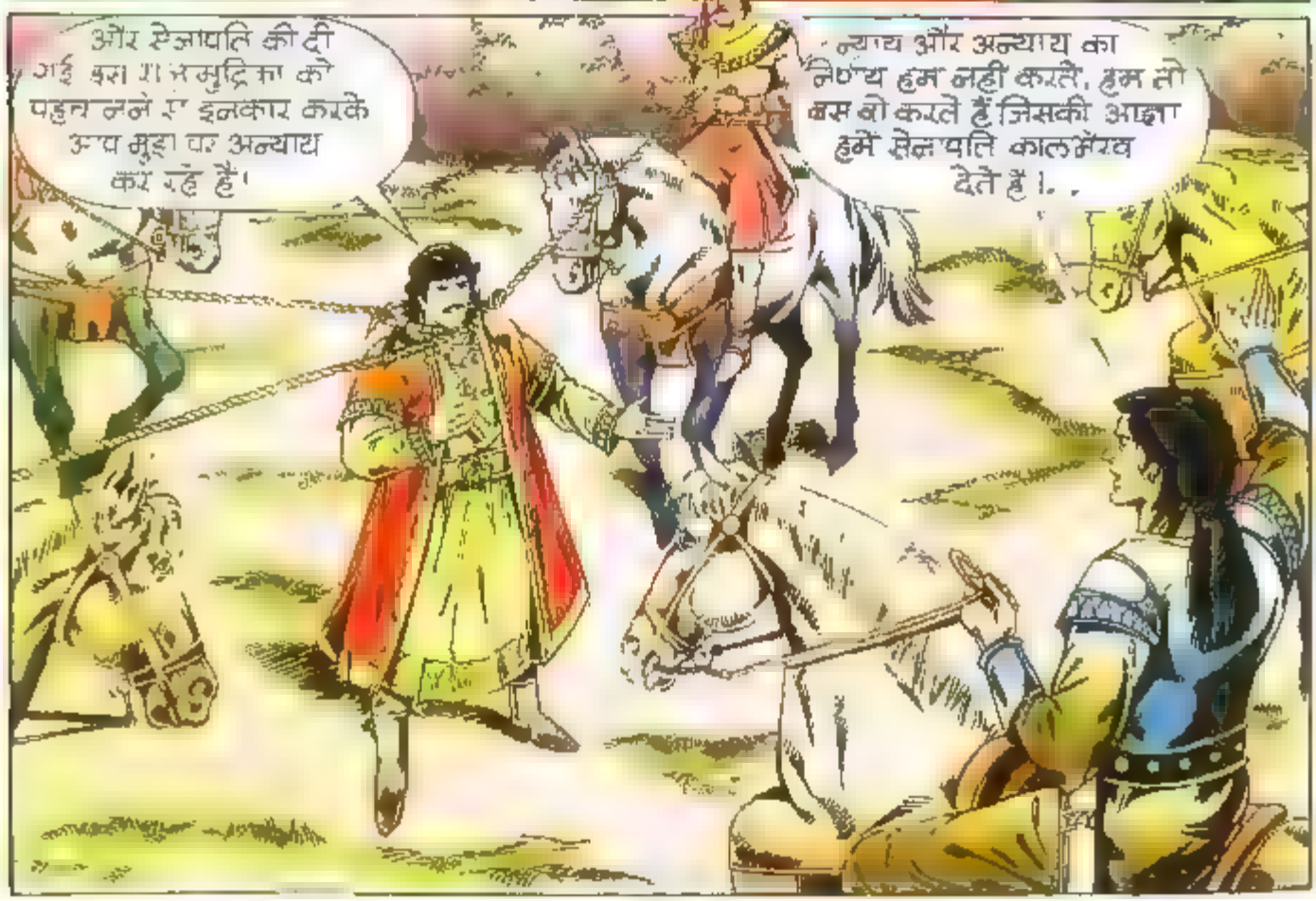
और सेनापति की दी गई वस्त्र या मुद्रिका को पहनने से इनकार करके अपने मुंह पर अन्याय कर रहे हैं।
न्याय और अन्याय का निर्णय हम नहीं करते, हम तो बस वो करते हैं जिसकी आज्ञा हमें सेनापति कालभैरव देते हैं।..

.. और तुम्हें इस नगर में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं है।
नगर में प्रवेश किए बिना लौटना तो अब हमारी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है

.. और विराट को प्रवेश करने से रोकना..
तुम्हारी भुजाओं के

... वश
की बात नहीं
है.
जैसे समुद्र की लहरें रेत को बहाकर ले जाती है...

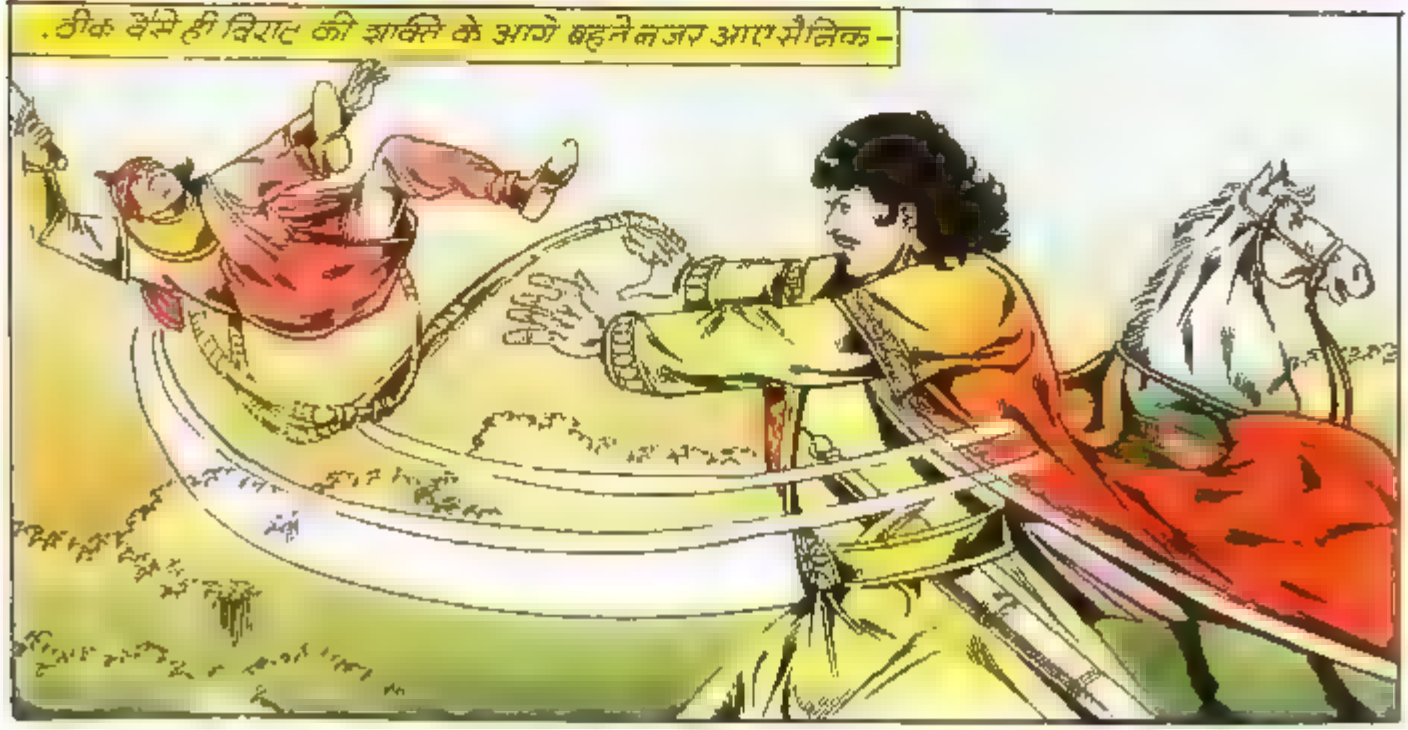
.ठीक वैसे ही विराट की शक्ति के आगे बहते नजर आए सैनिक –

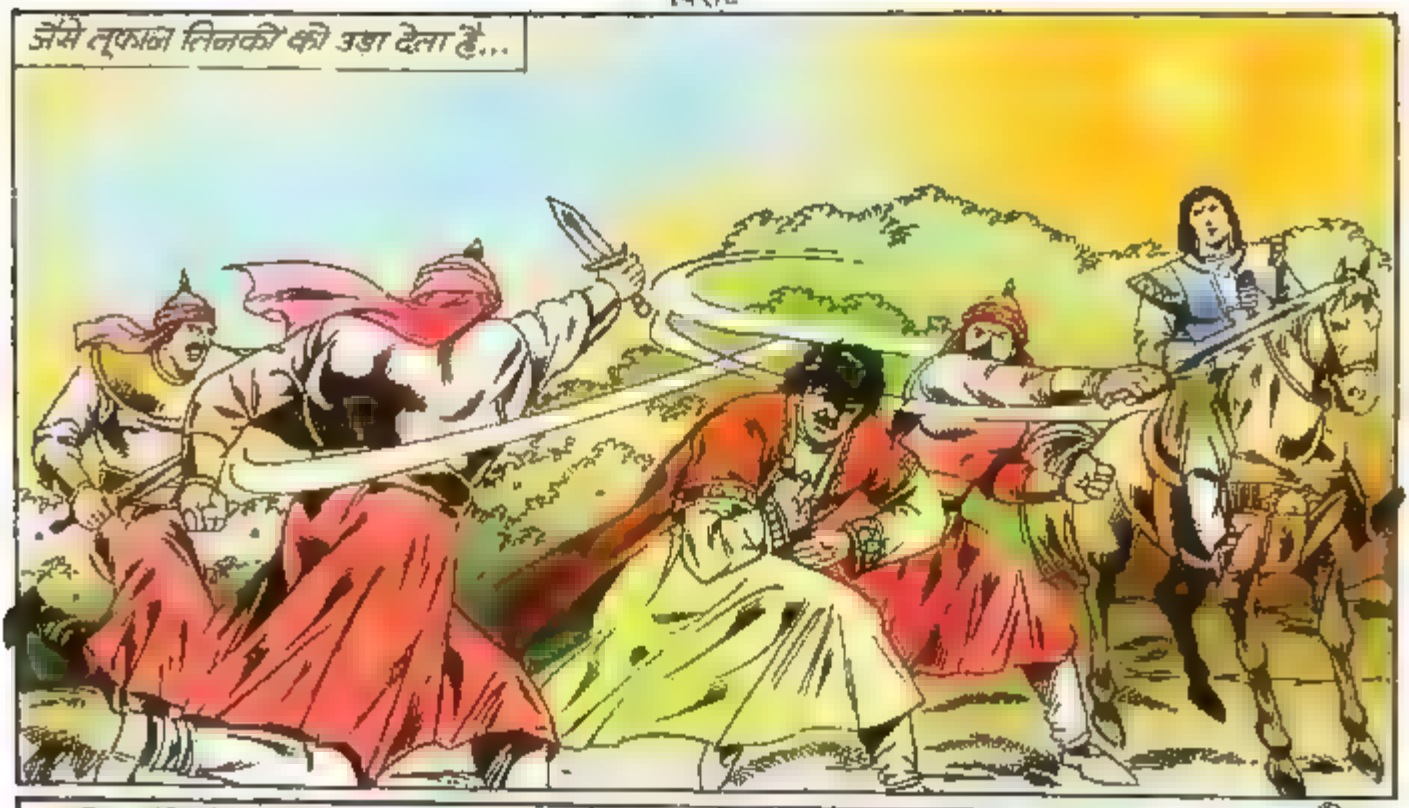
जैसे तूफान तिनकों को उड़ा देता है...

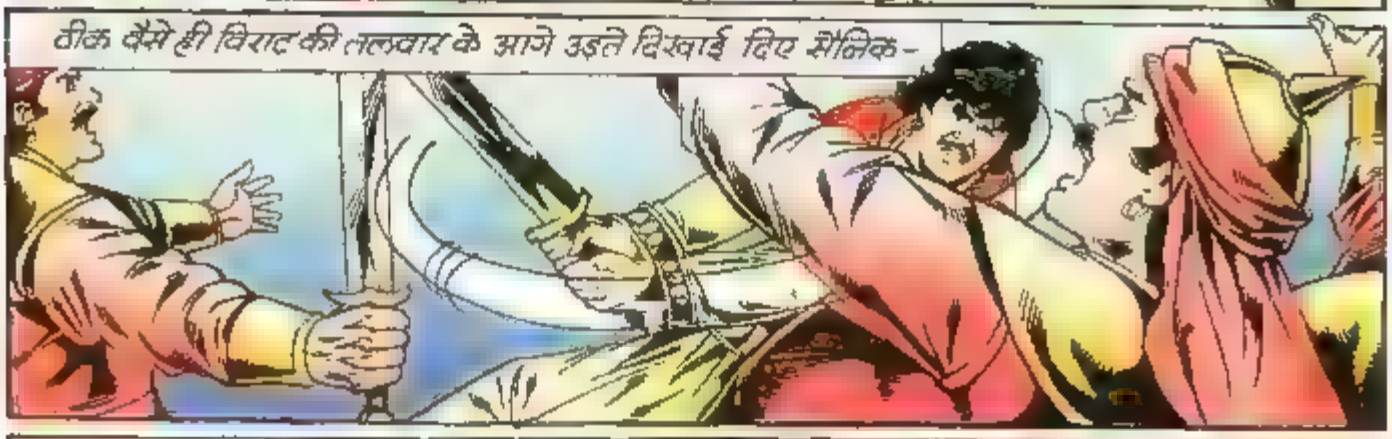
ठीक वैसे ही विराट की तलवार के आगे उड़ते दिखाई दिए सैनिक -

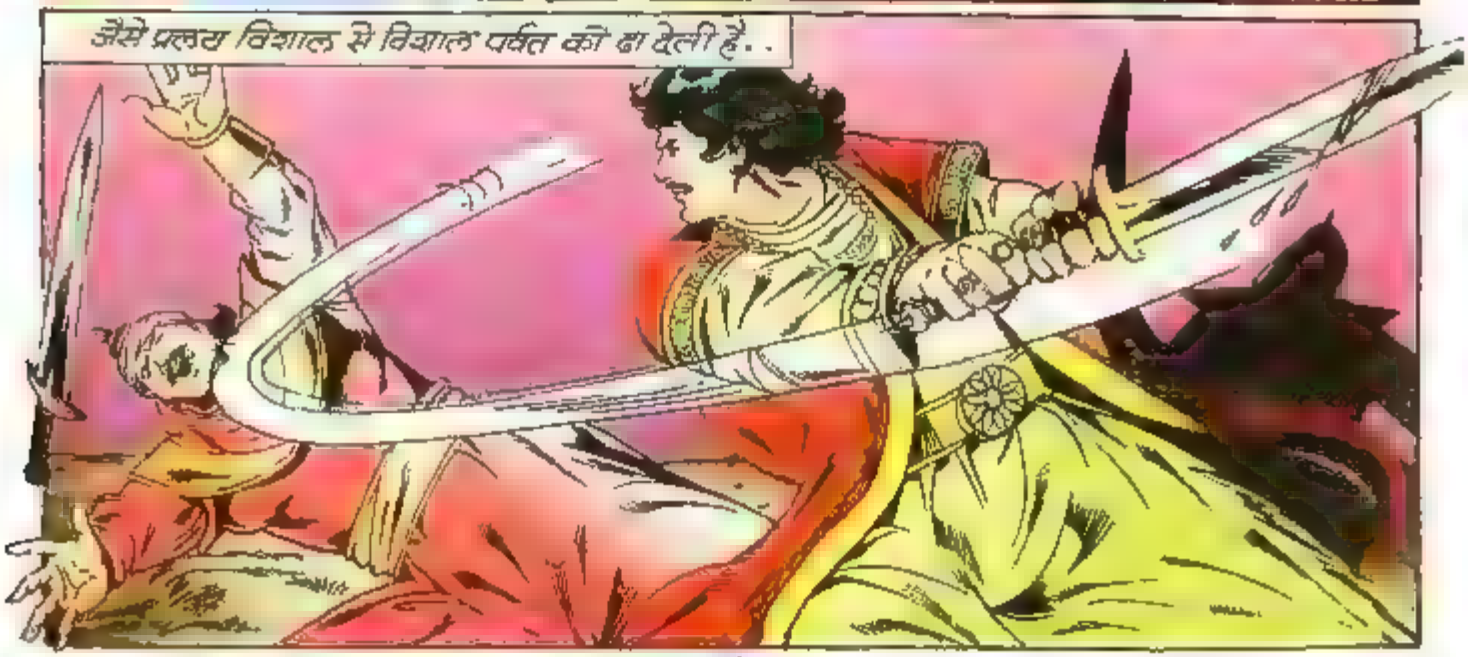
जैसे प्रलय विशाल से विशाल पर्वत को ढा देती है..

ठीक वैसे ही विराट के साहस के सजग होते नजर आए उसके शत्रु-
अचानक वहां गूंजी वह मेघ गर्जना--
ठहरो!
विद्युत से चलते विराट के हाथ रुके--
तेजी से वह घना आकाश की दिशा में उड़ता जिधर मौजूद थे
महाराज!
कौन हो तुम जो राज्य के सैनिकों पर हथियार उठाने का दुस्साहस कर रहे हो। दण्ड जानते हो इसका?

राज्य के सैनिकों पर हथियार उठाने का दण्ड तो निश्चय ही मृत्यु दण्ड होगा महाराज!..
परन्तु एक निर्दोष और साधारण नागरिक पर हथियार उठाने का जो अपराध आपके सैनिक कर रहे हैं उसका दण्ड क्या होगा ये भी बता दीजिए महाराज!

कौन हो तुम?
मैं दक्षिण क्षेत्र के सरपंच वीरबाहु का छोटा पुत्र विराट हूं महाराज! कुछ दिनों पहले मैंने एक मत्स्यक्षी यंत्र को बनाया था जिससे प्रसन्न होकर आपके सेनापति ने मुझे राजधानी आने का निमंत्रण दिया था और..

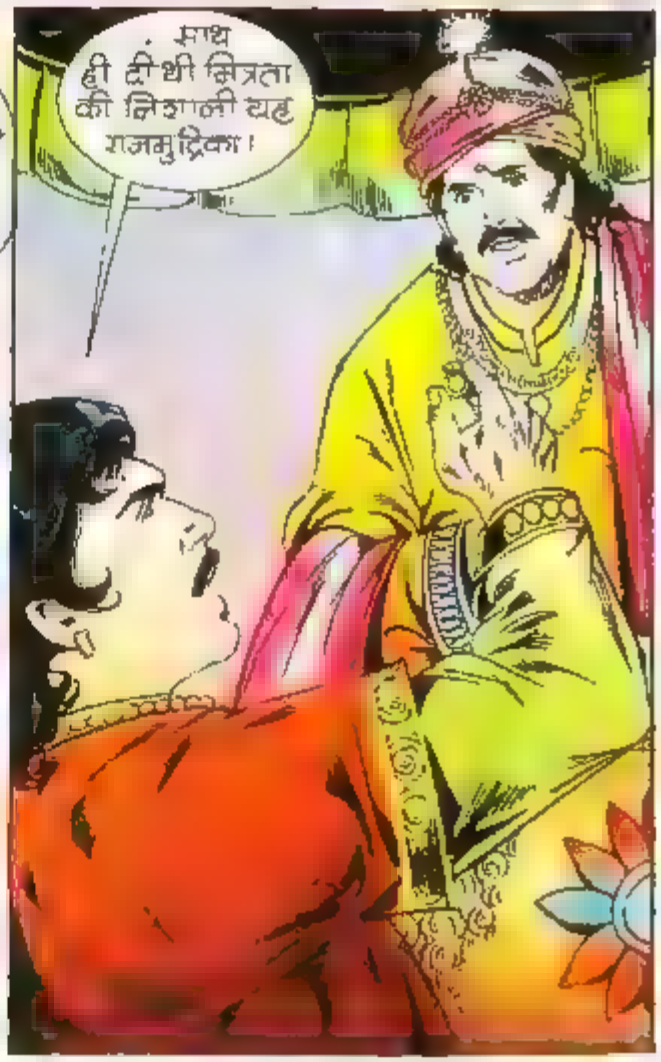
साथ ही ये थी मित्रता की निशानी यह राजमुद्रिका!

तुम हस्तिनापुर राज्य के सबसे वफादार और वीर सरपंच वीरबाहु के पुत्र विराट हो।
हमने तुम्हारी वीरता के चर्चे सुने हैं हम तुम्हें राजधानी में देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए।

फिर क्रोध में भरकर महाराज उपसेनापति दुर्जन की तरफ पलटे –
दुर्जन! विराट को सम्मान के साथ राज-महल ले चलो। ध्यान रहे विराट हमारा खास मेहमान है।
महाराज की आखों में अपने प्रति नफरत और विराट के प्रति सम्मान के भाव साफ देख रहा था उपसेनापति दुर्जन

समाप्त

राज कॉमिक्स प्रस्तुत करते हैं बाल मासिक पत्रिका

फैंग-14

चुलबुली, चुटीली, चित्रकथाएं। ज्ञानवर्धक जानकारियां! विज्ञान कथाएं एवम सिर चकराने वाली पहेलियां।

पृष्ठ संख्या: 68
मूल्य: 10/-

फरवरी अंक

जनवरी माह में सभी पुस्तक विक्रेताओं के पास उपलब्ध। न मिलने पर हमें लिखें:
फैंग, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84. फोन:7221410.

- भारतीय संस्कृति की ज्ञान गंगा में नहाएं
- पौराणिक सम्पदा को अपने घर में सजाएं
- नई पीढ़ी के स्वर्णिम निर्माण के लिए पढ़ें और पढ़ाएं

राज चित्रकथा

की गौरवशाली बारह नई चित्रकथाएं

- राम
- द्वारिकाधीश कृष्ण
- अर्जुन का बनवास
- नीलकंठ शिव
- लक्ष्मण
- वासुदेव कृष्ण
- भीम
- सती
- पार्वती
- बलराम
- सूर्यपुत्र कर्ण
- पवनपुत्र हनुमान

प्रत्येक का मूल्य 15/-

सभी चित्रकथाएं आपके शहर के समस्त बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। न मिलने पर कोई भी चार चित्रकथाएं मंगाने के लिए 60/- का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। चारों चित्रकथाएं आपको रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेज दी जाएंगी। मनीआर्डर के निचले हिस्से पर कॉमिकों के नाम लिखकर भेजें।

तूने अपने इमारती जंगल से, हिमालय के इस दर्रे में आकर बहुत बड़ी गलती की है नागराज। क्योंकि न तो तू ठंड सह पाता है और न ही तेरे नाग! पर हमारी प्रजाति ठंड में ही जिन्दा रहती है, क्योंकि हम शिवजी के कंठ से लिपटे रहने वाले नाग के वशंज हैं...
अब न तो तू अपने आप को बचा पाएगा और न ही महानगर को!...ढक जाएगा महानगर अंधेरे में...
जब फैलेगा हमारा...
फन
राज कॉमिक्स में नागराज का एक ऐसा विशेषांक जिसे पढ़कर आपका बदन सिहर उठेगा...हिस्स!

तू सितारों की डगर से झूम के निकल
यह जमीन क्या विराट आसमां पे चल

राज कॉमिक्स में भीष्म पितामह व
शक्तिमान की भूमिका निबाहने वाले
मुकेश खन्ना का मेगा टी.वी. सीरियल

विराट-2

जादुई, तिलिस्मी घटनाओं से परिपूर्ण, राज परिवार के षड्यंत्रों व कुचक्रों की अनोखी दास्तान

A.H.W. TIGER SERIES